रोज एक दिन

गुजर गया आज का दिन भी
सुबह से सोच रहा था, जाउंगा
अल–सुबह निकलूंगा
बिस्तर पर आंख मूंदने से पहले किया था तय
परंतु...
सुबह का आलस, पांव बंध गए
हिम्मत दे गई जवाब
एक बार फिर किया निश्चय
दोपहर बाद
पक्का...
थोड़ी देर का ही तो है काम।
शाम ढले, तमाम बहाने
रिक्शा का नहीं मिलना
बाबू का सीट पर न होना
लौटते में देर हो जाना।
फिर हुआ निर्णय
सारे कागजात लेकर
सुबह जाउंगा
भले ही पूरा दिन लग जाए
लौटूंगा, तो काम निपटाकर
निश्चित...।
आज तक हासिल न कर सका,
एक अदद नौकरी।
बिल जमा नहीं होने के चलते
कट गई घर की बिजली।
डाकखाने से नहीं ला पाया लिफाफा
बहन को लिख सकूं दो शब्द।
सुबह से शाम और शाम से वही सुबह,
रोज गुजर जाता है एक दिन!

————————————————————